3

पौलुस की नज़रों से

(फिलिप्पियों 1:12-20)

आपने यह कहावत सुनी होगी कि ''जब जीवन आपको नींबू पकड़ा दे, तो आप उस की शिकंजवीं बना लो।'' यह उदाहरण बड़ा है: नींबू का रस अपने आप में खट्टा है, पर ठण्डे पानी और चीनी में मिला नींबू का रस शिकंजवी बन जाता है, जो ताज़गी देने वाला एक पेय है। यह रूपक फिट बैठता है। जीवन कई बार हमें ''नींबू'' यानी बेस्वाद या खट्टी परिस्थितियां ''पकड़ा'' देता है। जब ऐसा होता है तो हम उस परिस्थिति को केवल सहने की कोशिश कर सकते हैं या फिर हम इसमें से कुछ भलाई निकालने की कोशिश कर सकते हैं। यानी हम अपने ''नींबुओं'' की ''शिकंजवीं'' बना सकते हैं।

पौलुस ने यह कहावत तो नहीं सुनी होगी पर इसके पीछे की फिलास्फी को वह मानता होगा। मसीही बनने के समय से ही उसे ''नींबुओं'' की ''भरी गाड़ी'' पकड़ाई गई थी। प्रेरितों के काम की पुस्तक उसके साथ होने वाले दुर्व्यवहार की थोड़ी सी कहानी बताती है (देखें प्रेरितों 9:1-23:11), परन्तु वह तो प्रभु के लिए उसके द्वारा सही जाने वाली पीड़ा का केवल एक अंश था (देखें 2 कुरिन्थियों 11:23-30)। उसका बिल्कुल ताज़ा अपमान गलत कारावास था। उसने कैसरिया में दो साल बिताए थे (देखें 23:12-26:32)। कैसर की दोहाई देने के बाद (प्रेरितों 25:10-12) उसे रोम भेज दिया गया था (देखें प्रेरितों 27:1-28:15)। पौलुस के फिलिप्पियों को लिखते समय वह उस नगर में दो साल से कैद था (प्रेरितों 28:30; देखें 28:16-31)। (इस तथ्य सहित कि पौलुस की शीघ्र ही छूट जाने की उम्मीद थी, इस पुस्तक के कई विवरण यह संकेत देते हैं कि यह रोम में पौलुस की पहली कैद के अन्त के निकट लिखा गया [2:24])।

उसके मन में *प्रचारक के रूप में* रोम जाने की बड़ी इच्छा थी (रोमियों 1:10, 11, 13; 15:22-24); इसके बजाय वह वहां *क़ैदी* के रूप में था! ऐसी परिस्थिति में कोई और होता तो उसे अपने आप पर तरस आता पर वचन ऐसा कोई संकेत नहीं देता कि पौलुस के मन में कोई कड़वाहट थी।

पौलुस अपने ''नींबुओं'' से ''शिकंजवी'' कैसे बना पाया? इसका उत्तर उस सब के प्रति जो कुछ उसके साथ हुआ उसके *व्यवहार* में मिलता है। हां, हम पहले ही सही व्यवहार को विकसित करने के महत्व की बात कर चुके हैं, पर फिलिप्पियों की पुस्तक के अपने अध्ययन में हम इसे बार-बार सुनेंगे। एक अर्थ में यह पुस्तक सही व्यवहार की आवश्यकता पर ही है:

> जैसा मसीह यीशु का *स्वभाव* था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो (2:5)।
>
> सो हम में से जितने सिद्ध हैं, यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही *विचार* हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रकट कर देगा (3:15क)।

> अन्त में, हे भाइयो, जो-जो बातें सत्य हैं, और जो-जो बातें आदरणीय हैं, और जो-जो बातें उचित हैं, और जो-जो बातें पवित्र हैं, और जो-जो बातें सुहावनी हैं, और जो-जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो-जो सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो (4:8; KJV)।

यदि आपने पौलुस को रोम में देखा होता तो आपको ज़ंजीरों से बंधा हुआ एक बूढ़ा प्रचारक दिखाई देता। फिलेमोन 9, प्रेरितों 28:20 और इफिसियों 6:20 भी पढ़ें। ऊपर दिए दो हवालों में ''कैदी'' के लिए यूनानी शब्द (*halusis*) का अर्थ है ''छोटी ज़ंजीर जिस से कैदी की कलाई उस सिपाही की कलाई से बंधी होती थी जो उसका रक्षक होता था ताकि वह भाग न सके।''[1] पौलुस की पाबंदी और उस पर पड़े और अपमानों के ढेर पर विचार करें तो आप हमदर्दी या क्रोध में अपना सिर हिलाने लग सकते हैं। परन्तु अपना ध्यान उस से हटाकर जो देखा जा सकता है उस पर यानी पौलुस के दिल पर लगाएं जिसे देखा नहीं जा सकता। इस परिस्थिति को देखते हुए पौलुस ने इसे त्रासदी नहीं, बल्कि विजय समझा। उसने अपने आपको बंदी नहीं, बल्कि विजयी के रूप में देखा।

इस पाठ में हमारी चुनौती प्रेरित की दृष्टि से यानी परिस्थिति को वैसे देखने की होगी जैसे उसने इसे देखा। ऐसा करके, शायद मुझे और आपको जीवन को सकारात्मक ढंग से देखने को सीखने का अवसर मिले।

उसने परमेश्वर के कार्य की उन्नति को देखा (1:12-14)

हम पौलुस के पत्र के मुख्य भाग में पहुंच गए हैं। मुख्य भाग का आरम्भ यह शामिल करते हुए कि लिखने वाला कितना दूर है, व्यक्तिगत टिप्पणी के साथ आरम्भ करने की परम्परा थी। एक अर्थ में पौलुस ने इस पत्री का मुख्य भाग निजी जानकारी से आरम्भ किया। ... परन्तु सचमुच में नहीं। उसका ध्यान अपने ऊपर नहीं, बल्कि यीशु और यीशु के सुसमाचार पर था।

उसने आरम्भ किया, ''हे भाइयो, मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो'' (आयत 12क)। ''भाई'' और ''भाइयों'' पौलुस के पसंदीदा शब्द थे। इनमें पारिवारिक सम्बन्ध का संकेत मिलता है। उसके पत्रों में 130 या इससे अधिक बार इन शब्दों का इस्तेमाल हुआ है, जिनमें चार अध्यायों वाली इस छोटी सी पुस्तिका में भी नौ बार है (आयतें 12, 14; 2:25; 3:1, 13, 17; 4:1, 8, 21)।

उसने आगे कहा, ''... मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि मुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है।'' ''मुझ पर जो बीता है'' वाक्यांश में पौलुस पर कालांतर में होने वाली हर बात और वर्तमान में उसके द्वारा सही जाने वाली बातें शामिल हैं। उसने इन दो शब्दों ''मुझ पर जो बीता है'' के साथ उस सब को खारिज कर दिया।

उसका ध्यान समस्याओं पर नहीं, बल्कि ''सुसमाचार की बढ़ती'' पर ही था। ''सुसमाचार'' शब्द का अनुवाद यूनानी भाषा के मिश्रित शब्द *euangelion* से लिया गया है जिसका अर्थ ''शुभ समाचार'' है।

सुसमाचार की बढ़ती की बात करते हुए पौलुस ने मनोरम शब्द का इस्तेमाल किया। यूनानी

शब्द का अनुवाद ''बढ़ती'' एक मिश्रित शब्द (*prokope*) से लिया गया है, जिसका क्रिया रूप (*prokoptein*) में अर्थ ''आगे को काटना''[2] है। ''मूल में इस शब्द का इस्तेमाल किसी मार्गदर्शक द्वारा झाड़ियों के बीच में से रास्ता काटने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।''[3] इस शब्द का इस्तेमाल सेना की बढ़ती में बाधा डाल सकने वाले पेड़ों और झाड़ियों को काटते हुए सेना के आगे-आगे चलने वाले सेना के इंजीनियरों की गतिविधि के वर्णन के लिए भी किया जाता था।[4] आम तौर पर इससे नया इलाका मिल जाता था।[5] पौलुस की कैद सुसामचार के लिए ''रास्ता साफ़ कर रही'' थी!

खोए हुओं के साथ सम्पर्क

पौलुस ने अपनी कैद से होने वाली सुसमाचार की बढ़ती के दो उदाहरण दिए। पहला तो खोए हुओं के साथ सम्पर्क था। पौलुस को यरूशलेम में अपनी गिरफ़्तारी के समय से ही ज़बर्दस्त सुसमाचारीय अवसर प्राप्त हुए थे। उसने यहूदी महासभा, रोमी हाकिमों और राजा सहित अन्य उच्च पदाधिकारियों पर प्रचार किया था (प्रेरितों 23:1; 24:10, 24, 25; 25:23; 26:1)। परन्तु इनमें से रोम में सिपाहियों के साथ ज़ंजीरों में बंधा होने से मिलने वाले अवसर से नहीं है (देखें प्रेरितों 28:16)। ''सुसमाचार की बढ़ती'' (फिलिप्पियों 1:12) की बात करने के बाद उसने कहा, ''यहां तक कि कैसरी राज्य की सारी पलटन और शेष सब लोगों में यह प्रकट हो गया है कि मैं मसीह के लिए कैद हूं'' (आयत 13क)।

यूनानी शब्द के अनुवाद ''कैसरी राज्य की सारी पलटन'' ''कैसरी राज्य'' का अंग्रेज़ी रूप ''पलटन'' होगा। कइयों का मत है कि यह सम्राट के महल को कहा गया है (देखें KJV)। जबकि यह सच है कि सुसमाचार कैसर के महल में पहुंच गया (4:22), पर अधिकतर विद्वानों का मानना है कि जैसा कि 1:13 में इस्तेमाल हुआ है, यह शब्द पलटन के लिए है। ये फुर्तीले सिपाही रोमी सेना की सबसे बढ़िया पलटन यानी वे टुकड़ियां थीं, जो रोम के शाही दरबान थे।[6] वे दस हज़ार चुनिंदा इतालवी सिपाही थे, जिनमें से प्रत्येक का पद सूबेदार के स्तर का था (जिसके ऊपर एक सौ से अधिक सिपाही थे)। अन्य ड्यूटियों के साथ-साथ वे सम्राट के निजी अंगरक्षक भी थे। रोम में उनका बहुत प्रभाव था और बाद में वे रोमी साम्राज्य के राजा बनाने वाले बन गए। उन्हें दोहरे वेतन और रोम में अपने घरों सहित कई विशेषाधिकार प्राप्त थे। बारह से सोलह सालों बाद रिटायर होने पर उन्हें रोमी नागरिकता और एक ग्रांट दी जाती थी। यह तथ्य कि पौलुस को इस पलटन के पास भेजा गया और वे उसके रक्षक थे, यह संकेत दे सकता है कि रोमी अधिकारियों ने उसके केस को इतना महत्व दिया था।

पौलुस की रक्षा करते हुए आम तौर पर शिफ्ट हर छह घंटे के बाद बदली जाती थी। इस प्रकार प्रेरित को एक दिन में चार सिपाहियों को प्रभावित करने का अवसर मिलता था। यदि मेरा गणित सही है तो दो साल के अंतराल में वह 2,920 लोगों के सम्पर्क में आया होगा![7] बेशक सिपाही पौलुस को कैदी ही मानते थे पर अपने व्यस्क दिनों में उसके ''सुनने वाले'' कैदी थे।

- उसके पत्र लिखवाते हुए, फिलिप्पियों के नाम पत्र जैसे।
- तीमुथियुस और इपफ्रुदितुस जैसे मित्रों के साथ बात करते हुए (देखें 1:1; 2:25)।
- उससे मिलने आने वालों को सिखाते हुए (देखें प्रेरितों 28:17-31)।

- परमेश्वर से प्रार्थना करते और उसकी महिमा करते (देखें फिलिप्पियों 1:3, 4; प्रेरितों 16:25, जो एक पहली कैद के बारे में बताता है, उस गतिविधि को दिखाता है, जिसमें पौलुस कैद के दौरान लगा रहता था।)
- अपने पकड़ने वालों से बातचीत करते और उनके प्रश्नों का उत्तर देते हुए। (वचन यह नहीं कहता कि वह सिपाहियों से बात करता था, पर क्या आप उससे इस विलक्षण, अवसर से चूकने की कल्पना कर सकते हैं? देखें रोमियों 1:14-16.)

यदि पौलुस रोम में अपनी योजना के अनुसार चला जाता, जैसा उसने सोचा था और रोम के फोरम में प्रचार करता तो कोई सिपाही उसे सुनने के लिए रुकता नहीं, परन्तु क्योंकि वे रात दिन जंजीर से उसके साथ बंधे होते थे इस कारण उनके लिए उसकी बात को नज़रअन्दाज़ करना कठिन होता होगा। परमेश्वर रहस्यमय ढंगों से काम करता है।

क्या इन में से कोई सिपाही मसीही बना? बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार कुछ सिपाही मसीही बन गए। कम से कम उन्हें समझ तो आया कि पौलुस किसकी ओर से बातें करता है। प्रेरित ने कहा कि वह ''मसीह के लिए कैद'' था और कैसरी राज्य की सारी पलटन में यह प्रकट हो गया था। उन्हें पता चल गया था कि वह किसी अपराध के कारण नहीं, बल्कि यीशु में अपने विश्वास के कारण कैद था। NIV में इस प्रकार है ''पूरे महल के पहरेदारों और हर किसी को समझ आ गया है कि मैं मसीह के लिए ज़ंजीरों में हूं।''

पौलुस ने यह भी कहा कि उसकी ''मसीह के लिए कैद'' ''सब लोगों'' को पता चल गई है (आयत 13ख)। ''सब लोगों'' में दूसरे लोग भी होंगे, जिन्हें प्रेरित ने प्रभावित किया था। (इनमें से एक ओनेसीमुस नामक भगौड़ा गुलाम भी था; देखें फिलेमोन 10-21)। रोम में खबर बहुत जल्दी फैल गई। पौलुस ने कैसर के घराने के लोगों को परिवर्तित करने में अवश्य योगदान दिया होगा (देखें 4:22)। परमेश्वर का दूत चाहे बंधा हो पर परमेश्वर का संदेश ज़ंजीरों में नहीं था (देखें 2 तीमुथियुस 2:9)!

इस प्रकार उसके बंधन के कारण सुसमाचार की बढ़ती के ढंग का पहला उदाहरण वचन को फैलाने का विलक्षण अवसर था। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, आपको और मुझे कई प्रकार से ''कैद'' का अहसास हो सकता है पर उन ''ज़ंजीरों'' में से अधिकतर से हम में दूसरों के साथ सुसमाचार को बांटने का अवसर मिलता है। पौलुस बेशक सिपाहियों के साथ ज़ंजीरों में बंधा था, पर वे भी उसके साथ बंधे थे। इसी प्रकार मसीही लोग नापसन्द परिस्थितियों में ''बंधे'' हो सकते हैं पर दूसरे लोग भी उन्हीं परिस्थितियों में ''बंधे'' हुए हैं जिन से मसीही लोगों को उन्हें प्रभावित करने के अवसर मिलते हैं। एक मां को लग सकता है कि वह छोटे बच्चों से भरे घर में ''बंधी'' है। पर यदि वह उन बच्चों को प्रभु के मार्ग की शिक्षा देती है (व्यवस्थाविवरण 6:7) तो कौन जाने कि वे बच्चे राज्य में कितना अच्छा काम कर सकते हैं?[8] किसी स्त्री को लग सकता है कि वह ''अविश्वासी जीवन साथी'' से बंधी है पर उसे उसके सामने अच्छा नमूना बनने का अवसर मिला है (देखें 1 पतरस 3:1, 2)। एक कर्मचारी को नौकरी से जिसे वह पसन्द नहीं करता ''बंधे'' होना लग सकता है, अधिकतर नौकरियों में सहकर्मी होते हैं जिन्हें सिखाया जा सकता है। कई मसीही लोग शारीरिक दुर्बलताओं से ''बंधे'' हैं, परन्तु ऐसी परिस्थितियों का

इस्तेमाल मसीह के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए किया गया है। शारीरिक कमियों वाले कुछ लोगों ने पाया है कि उनके पास समय है, जो परमेश्वर की सेवा और दूसरों की सहायता करने के लिए तंदुरुस्त होने पर उनके पास नहीं होना था। घर में लगी एक स्त्री जिसे मैं जानता हूं वह दूसरों को कार्डों, पत्रों और फोन के द्वारा प्रोत्साहित करती है।

उद्धार पाए हुओं के लिए साहस

पौलुस ने सुसमाचार की बढ़ती में उसके बंधनों से मिली सहायता का उदाहरण दिया कि उन से उद्धार पाने वालों को हियाव दिया गया। उसने लिखा, ''... प्रभु में जो भाई हैं, उन में से अधिकांश मेरे कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी साहस करते हैं'' (आयत 14)। यह बात पूरी तरह से सच नहीं थी जैसा कि अगली कुछ आयतों के बाद पौलुस ने लिखा, परन्तु यह सच थी।

पौलुस की कैद से दूसरों को हियाव कैसे मिला? जब उन्होंने देखा कि पौलुस को कैसे भरोसा था कि प्रभु उसे सम्भालेगा, तो इससे परमेश्वर में उनका भरोसा बढ़ा होगा। जब अपनी परेशानियों के बावजूद उन्होंने प्रेरित की दिलेरी देखी तो इससे उन्हें हर हालात का सामना करने का हियाव मिला होगा। उन्होंने विचार किया होगा कि यदि परमेश्वर किसी आदमी के द्वारा ज़ंजीरों में से इतने बड़े काम कर सकता है तो वह उनके द्वारा भी बड़े-बड़े काम कर सकता है। पौलुस की हालत से उनके प्रयासों को बढ़ाने में सहायता मिली होगी कि प्रमुख वक्ताओं में से एक के कष्ट में पड़े होने पर सुसमाचार की लहर में रुकावट न पड़े।

आयत 14 ''प्रचार'' के बजाय ''सुनाना'' शब्द का इस्तेमाल करती है। ''प्रचार'' के लिए सामान्य यूनानी शब्द (*karusso* ''सुनाना'') सार्वजनिक घोषणा का संकेत देता है जब कि यहां इस्तेमाल शब्द (*laleo* का एक रूप) ''बोलना'' के अर्थ वाले सामान्य यूनानी शब्दों में से एक है। टीकाकारों ने सुझाव दिया है कि यहां ज़ोर वचन की सार्वजनिक घोषणा पर नहीं, बल्कि हर मसीही द्वारा सुसमाचार को दिन-ब-दिन बताने पर है (प्रेरितों 8:1, 4)।

मसीहियत के एक आरम्भिक आलोचक सैल्सस ने लिखा कि ''चरमकार, ऊन की कढ़ाई करने वाले, मोची और सबसे अनपढ़ और मनुष्य जाति के गंवार लोग, सुसमाचार के उत्साही प्रचारक हैं।''[9] सैल्सस ने एक आलोचक के रूप में यह कहा, परन्तु यह इसकी सबसे बड़ी प्रशंसा थी। ''उनके पुलपिट व्यापारी का काउंटर, चुंगी लेने वाले का मेज़, और किसान के हल का डण्डा थे।''[10] पौलुस की कैद ने मसीही लोगों को ऐसी बड़ी हिम्मत दी।

उसने परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार होते हुए देखा (1:15-18)

पौलुस ने कैद का अपमान ही नहीं सहा, बल्कि उसे भाइयों की वह पीड़ा भी सहनी थी जो उसे तुच्छ जानते और उसे हानि पहुंचाने की कोशिश करते थे। अजीब बात है कि वे ऐसा मसीह का प्रचार करके करते थे!

> कितने तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं, और कितने भली मंशा से। कई एक तो यह जान कर कि मैं सुमसाचार के लिए उत्तर देने को ठहराया गया हूं प्रेम से प्रचार करते हैं। और कई एक तो सिधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं,

यह समझ कर कि कैद में मेरे लिए क्लेश उत्पन्न करें (आयतें 15-17)।[11]

''कई'' लोग ''भली मंशा'' से और उसके लिए ''प्रेम से'' ''मसीह का प्रचार करते'' थे। वास्तव में ''अधिकांश'' ऐसा ही कर रहे थे (1:14)। वे पौलुस की, उसके कार्य की, उसकी कोशिश की सराहना करते थे। वे जानते थे कि उसे ''सुसमाचार का उत्तर देने के लिए ठहराया गया'' था। संदर्भ में यूनानी शब्द के अनुवाद ''ठहराया गया'' का अर्थ ''ईश्वरीय नियुक्ति'' था। पौलुस को *यीशु* की खुशखबरी की सफ़ाई देने के लिए ''नियुक्त किया गया'' था। चाहे शीघ्र ही उसे कैसर के दरबार में पेश होना था पर उसे अपनी सफ़ाई देने की चिन्ता नहीं थी। उसकी चिन्ता सुसमाचार की सफाई देना था!

जो बात हम पक्का नहीं बता सकते

परन्तु कुछ भाई गलत उद्देश्य से यानी पौलुस की निराशा को बढ़ाने की आशा से मसीह का प्रचार कर रहे थे। वे लोग कौन थे? ये लोग अविश्वासी या वे यहूदी होंगे जिन्होंने कालांतर में पौलुस को सताया था। पौलुस देह में अपने भाइयों यानी अपने साथी यहूदियों के लिए अक्सर ''भाई'' शब्द का इस्तेमाल करता था (देखें 1:14)। परन्तु ऐसे लोग ''मसीही का प्रचार'' नहीं कर रहे होंगे (आयत 15)। इसके अलावा ये यहूदी शिक्षक यानी यहूदी मसीह नहीं होंगे, जो सिखाते थे कि मसीही लोगों को उद्धार पाने के लिए मूसा की व्यवस्था को मानना आवश्यक है। पौलुस *उन के* संदेश को कभी पसन्द नहीं करता था (देखें गलातियों 1:8, 9; 5:2-4)। परन्तु उसे फिलिप्पियों 1:18 वाले लोगों का संदेश अच्छा लगा था। उस भाग को ध्यान से पढ़ें। समस्या *संदेश* की नहीं, बल्कि संदेश देने वालों की *मंशा* की थी।

हम नहीं बता सकते कि पौलुस के ध्यान में कौन से लोग थे, परन्तु पहले वे रोम में मसीही इवैंजलिस्ट रहे थे। रोम उन कुछ एक नगरों में से था, जहां पौलुस के पहुंचने से पहले ही कलीसिया स्थापित हो चुकी थी। आम तौर पर वह ''दूसरे की नेव पर घर बनाने'' (रोमियों 15:20) को प्राथमिकता नहीं देता था। फिर भी रोम में जाने की उसकी बड़ी देर से इच्छा थी (रोमियों 1:11-15)। शायद इसका एक कारण यह था कि उसे मालूम था कि रोम से रोमी साम्राज्य के सब कोनों तक सुसमाचार फैल सकता है।

पांच या इससे अधिक वर्ष पूर्व,[12] पौलुस ने रोम की कलीसिया को लिखा था और नाम लेकर दो से अधिक दर्जन मसीही लोगों को सम्बोधित किया था (रोमियों 16:3-16)। बेशक उस नगर में कलीसिया को पौलुस के आगमन तक कई योग्य सुसमाचार प्रचारकों से आशीष मिली थी।

अफ़सोस की बात है कि इन में से कुछ पौलुस को पसन्द नहीं करते थे। हमें नहीं मालूम कि क्यों। पौलुस के प्रति उनकी शत्रुता रोम की कलीसिया में सब को पता नहीं थी (देखें प्रेरितों 28:14ख-16क)। यह विशेष सुसमाचार प्रचारक शायद कलीसिया के प्रति नाम बनाने की कोशिश कर रहे थे और इस तथ्य से परेशान थे कि पौलुस कैदी के रूप में नगर में आ गया है। यह भी सम्भव है कि वे प्रेरित की ओर ध्यान खींचे जाने से ईर्ष्या रखते थे। उन्हें नेतृत्व की अपनी भूमिकाएं खतरे में लगी हो सकती हैं।

इस परिस्थिति का सबसे अजीब भाग यह है कि इन लोगों ने निर्णय लिया कि सुसमाचार

के प्रचार से पौलुस को ''[उस की] कैद में क्लेश'' मिलेगा। शायद उन्होंने सोचा कि पौलुस की मंशा भी उनकी तरह ही स्वार्थी है। इसलिए उन्हें लगा होगा कि यदि वे पौलुस से बढ़कर प्रचार करने में ''सफल'' हो जाएं तो इससे वह परेशान होगा। एक सम्भावना और है कि उन्हें लगा कि सुसमाचार के ज़बर्दस्त प्रचार से रोमी अधिकारी परेशान होंगे और इससे पौलुस के लिए कठिनाई बढ़ जाएगी। यदि उन्होंने ऐसा सोचा तो उन्हें यह समझ होनी चाहिए थी कि उन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता था। परन्तु ईर्ष्या के पीछे कोई तर्क नहीं होता।

हम पक्का क्या जान सकते हैं

हम नहीं बता सकते कि गलत कारणों से प्रचार करने वाला कौन था या वह प्रचार क्यों कर रहा था पर वचन से हमें यह पता चलता है कि प्रभु की सेवा के लिए मन में मैल का होना सम्भव है। पौलुस को हानि पहुंचाने वालों की कोशिश करने वालों की मंशाओं को एक पल के लिए देखें। आयत 15 कहती है कि कुछ लोग विरोध से ''मसीह का प्रचार करते'' थे। स्पष्टतया इन प्रचारकों ने अपने आपको पौलुस के मुकाबले में देखा। झगड़ा और विरोध इकट्ठे चलते हैं और सदा से कलीसिया पर श्राप रहे हैं।

आयत 17 कहती है कि वे ''स्वार्थी इच्छा से'' मसीह का प्रचार कर रहे थे। यूनानी धर्मशास्त्र में शब्द का मूल अर्थ ''भाड़े के लिए सेवा करना'' था।[13] फिर इसका अर्थ उसके लिए हो गया जो *मात्र* वेतन के लिए यानी केवल *अपने* लाभ के लिए काम करता हो। अन्त में इसका सम्बन्ध राजनीति से यानी किसी भी कीमत पर लोगों को किसी के ''पक्ष'' में करने या समर्थन लेने के लिए काम करना था।

क्या आपको यह विश्वास करना कठिन लगता है कि पहली सदी में ऐसे मसीही थे? मुझे लगता है कि ऐसे लोग आज भी हमारे आस-पास पाए जाते हैं। हम दूसरों की कमियों को आसानी से जान सकते हैं, पर आइए अपने अन्दर झांकें। मसीही सेवा के लिए क्या हमारी मंशा ''शुद्ध'' से कम की हुई है? मैं पहले तो उन से एक बात कहूंगा जो प्रचार करने के इच्छुक हैं कि प्रचार करना ''अच्छी कमाई करने'' या ''आसान जीवन जीने'' का ढंग *नहीं* है। प्रचार करने को आदर पाने और ध्यान आकर्षित करने के माध्यम के रूप में *नहीं* माना जाना चाहिए। बल्कि यह तो आत्माओं को बचाने और परमेश्वर की महिमा का ढंग *है।* मैं उन से भी जो प्रचार नहीं करते बात करूंगा। हम में से हर किसी को यह जांच करना आवश्यक है कि मसीह के लिए हम जो कर रहे हैं वह *क्यों* कर रहे हैं? क्या हम कुछ काम केवल इसलिए करते हैं कि हमें तारीफ़ या प्रशंसा अच्छी लगती है? क्या हम ''तारीफ़ नहीं'' होने पर छोड़ जाना चाहते हैं? परमेश्वर ''शुद्ध मंशा से'' उसकी सेवा करने में हमारी सहायता करे।

पौलुस को गुस्सा आ सकता था वह कह सकता था, ''मैं पहले ही चार से अधिक साल से कैद में हूं और मैं इस असहनीय परिस्थिति से अधिक से अधिक लाभ उठाने की कोशिश कर रहा हूं। मैं सिखा रहा हूं और पत्र लिख रहा हूं और अच्छा व्यवहार बनाने की कोशिश कर रहा हूं। अब यह *मेरे अपने भाई* ही मुझे कष्ट पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं! ये अच्छी बात नहीं है!'' इसके विपरीत उसने कहा, ''सो क्या हुआ? केवल यह, कि हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई जाती है, और मैं इस से आनन्दित हूं, और आनन्दित

रहूंगा भी'' (आयत 18)। इसे ''महानतम लोगों में से एक की बेहतरीन बातों में एक'' कहा गया है।[14] पौलुस को पौलुस की चिंता नहीं थी। उसे सुसमाचार की चिंता थी। वह उसके बारे में आलोचकों के मन में पाई जाने वाली बातों से परेशान नहीं था, पर वह इस बात से आनन्दित था कि सुसमाचार सुनाया जा रहा है।

दो बातें ध्यान में रखी जानी आवश्यक थीं। पहली यह कि फिलिप्पियों 1:18 यह नहीं सिखाता कि किसी की मंशा का महत्व नहीं है। हम पहले ही मान चुके हैं कि हम कोई काम *क्यों* करते हैं जिसका परमेश्वर की दृष्टि में कोई महत्व है (देखें 1 कुरिन्थियों 13:1–3; रोमियों 16:17, 18; 2 कुरिन्थियों 9:7)। दूसरा, फिलिप्पियों 1:18 गलत मंशाओं के लिए दूसरों को दोषी ठहराने का नमूना नहीं है। पौलुस के विपरीत आप और मैं परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए नहीं हैं और न हम दूसरों की मंशा पर अधिकार से बात कर सकते हैं। *अपनी ही मंशा* की जांच करके और दूसरों की मंशा का निर्णय प्रभु पर छोड़कर हम भला करते हैं (देखें इब्रानियों 4:13; रोमियों 2:16)।

हम फिलिप्पियों 1:18 से क्या सीख *सकते* हैं? हम सीख सकते हैं कि दुर्व्यवहार के विनाशकारी विचारों से अपने मनों को कोलाहल में न डालें। वास्तविक या काल्पनिक दुर्व्यवहार पर उपहास करने वाले लोगों की हालत दयनीय है। इसके अलावा हम अच्छे लोगों को सराहना सीख सकते हैं, तब भी जब हमें संदेह हो कि हो सकता है कि वे वह भलाई साफ़ मंशा से नहीं कर रहे। हमें दूसरों में नकारात्मक नहीं, बल्कि सकारात्मक को देखने की आवश्यकता है।

उसने परमेश्वर की कृपा के उपाय को देखा (1:19, 20)

पौलुस ने अपनी परिस्थिति को देखकर और क्या देखा? उसने घटनाओं को ''अच्छा अन्त'' में पूरा होते देखा:

> क्योंकि मैं जानता हूं, कि तुम्हारी विनती के द्वारा, और यीशु मसीह की आत्मा के दान के द्वारा, इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा। मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूं, कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊं, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसे ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूं या मर जाऊं (आयतें 19, 20)।

इन आयतों में प्रेरित ने आगे कहा कि वह आनन्दित क्यों हैं (''प्रतिफल'' का शब्द 19 और 20 आयतों को आयत 18 से जोड़ता है)। दोनों आयतों की धड़कनें तेज़ हैं। आयत 19 में पौलुस ने कहा, ''मैं जानता हूं'' जानता के लिए यह सामान्य शब्द नहीं है, बल्कि ऐसा शब्द है जो ''पक्का ज्ञान'' का सुझाव देता है।[15] आयत 20 पौलुस की ''हार्दिक लालसा'' की बात करती है। ''हार्दिक लालसा'' मिश्रित यूनानी शब्द *apokaradokia* से लिया गया है जो संज्ञा *kara* (''सिर'') और क्रिया *dokein* (''देखना'') के साथ पूर्वसर्ग *apo* (''से दूर'') को मिलाता है। इस शब्द का अर्थ ''उत्सुक, ध्यान से देखना, जो इच्छा की एक वस्तु पर ध्यान लगाने के लिए दूसरी हर चीज़ से ध्यान हटा लेता है।''[16]

पौलुस का छूटना

जो कुछ हो रहा था उन सब पर अपना ध्यान लगाते हुए पौलुस ने दो अच्छे परिणामों को देखा। पहला तो उसका अपना छुटकारा था: ''क्योंकि मैं जानता हूं, कि तुम्हारी विनती के द्वारा, और यीशु मसीह की आत्मा के दान के द्वारा, इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा।'' यूनानी शब्द का अनुवाद ''उद्धार'' (*soterias* का एक रूप) का अधिक प्रचलित अनुवाद ''उद्धार'' ही है (देखें KJV)। ''उद्धार'' हमारे विश्वास का इतना महत्वपूर्ण भाग है और हमारे लिए इतना कीमती शब्द है कि कई बार हम भूल जाते हैं कि यह अपने आप में ''खोखला'' शब्द है। संदर्भ से ही संकेत मिलता है कि कोई किस तबाही से बचा है। पौलुस के मन में किस प्रकार का ''छुटकारा''/ ''उद्धार'' था? कुछ सम्भावनाएं क्या हैं?

- कैद से छूटना? शायद, पर पौलुस को अपने छुटकारे का इतना यकीन नहीं होगा (देखें 2:17, 23, 24)। ''मैं जानता हूं'' वाक्यांश यदि केवल छुटकारे के लिए है तो यह कुछ मज़बूत प्रतीत होता है। वह अपने शत्रुओं की झूठी निंदा और दुर्व्यवहार से छूट गया।
- शायद। पौलुस ने अय्यूब 13:16 के सप्तति अनुवाद में अय्यूब वाली शब्दावली का ही इस्तेमाल किया। कई टीकाकारों का मानना है कि पौलुस अय्यूब की बात ही दोहरा रहा था और उसके कहने का वही अर्थ था जो अय्यूब ने कहा था कि ''मैं निर्दोष ठहरूंगा'' (देखें अय्यूब 13:18)।
- नीरो के सामने आने की परेशानी से छूट गया? शायद; यह अगली आयत से जुड़ जाता है। कोई संदेह नहीं कि पौलुस ने प्रार्थना की कि रोमी अदालत में अपनी सफ़ाई देते समय यीशु में अपने विश्वास को हियाव से बता सके।
- अनन्तकाल के लिए छूट गया (उद्धार पाया)? पौलुस पूरे दिल से यही मानता था (फिलिप्पियों 1:23; देखें रोमियों 5:9)।

पौलुस के ''छूटने के'' मेरी व्यक्तिगत पसन्द अन्त वाली बात है। आम तौर पर ''उद्धार'' शब्द का इस्तेमाल पाप से उद्धार के लिए था। शायद यहां ''उद्धार'' शब्द में दोनों ही विचार हैं। पौलुस के साथ *जो भी होता* अन्त में वह उसका ''छुटकारा'' ही होना था।

उसका छुटकारा दो बातों के कारण होना था। एक तो फिलिप्पियों की प्रार्थनाओं से मिली सहायता थी: ''मैं जानता हूं कि तुम्हारी विनती के द्वारा मेरा उद्धार होगा।'' पौलुस ने उनके लिए प्रार्थना की (1:3, 4), वे उसके लिए प्रार्थना करते थे (1:19)। पौलुस को साथी मसीही लोगों की प्रार्थनाओं की लालसा रहती थी (रोमियों 15:30–32; 2 कुरिन्थियों 1:11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:25; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1, 2; फिलेमोन 22)। मसीही लोगों को एक दूसरे के लिए प्रार्थना करनी आवश्यक है।

उसके छुटकारे में दूसरा योगदान पवित्र आत्मा की सहायता थी: ''मैं जानता हूं कि तुम्हारी ... के द्वारा यीशु मसीह की आत्मा के दान के द्वारा मेरा उद्धार होगा।'' अनुवादित शब्द ''दान'' के यूनानी शब्द का मूल ''आपूर्ति''; (KJV) से ही हमें अंग्रेज़ी शब्द ''chorus'' मिला है जिसका अर्थ ''स्थाई'' है। यह शब्द मूलतया किसी यूनानी नगर द्वारा पर्व की योजना बनाने पर

गायक मण्डली का खर्च चुकाने के लिए इस्तेमाल होता था। अभिनय करने वालों को पैसे देने के लिए सरकार समृद्ध नागरिकों से अत्यधिक दान मांगती थी। अन्ततः गायक मण्डली के साथ इसका जुड़ाव बंद हो गया पर इस शब्द में उदारता से और अत्यधिक देने का विचार बना रहा।[17] ''यीशु मसीह की आत्मा'' पवित्र आत्मा ही है। यीशु ने पवित्र आत्मा को भेजने का वायदा किया था और उसने अपना वायदा पूरा कर दिया था (यूहन्ना 14:16, 17; प्रेरितों 1:8; 2:1-4)। विलियम बार्कले ने मिलता-जुलता वाक्यांश ''मसीह का पवित्र आत्मा मुझे उदार सहायता देता है'' अनुवाद किया है।[18]

पौलुस ने अनुमान लगाया कि पवित्र आत्मा उसके लिए उदारता से और अत्यधिक उपाय करेगा और पवित्र आत्मा हमारे लिए भी उपाय करता है। हमें पानी में डुबकी लेकर मसीही बनने पर दान के रूप में पवित्र आत्मा मिलता है (प्रेरितों 2:38)। पवित्र आत्मा जो परमेश्वर के सब लोगों में वास करता है, सामर्थ और सहायता का स्रोत है (रोमियों 8:11-13, 26-28)। पौलुस यह लिखते समय कि ''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी एक घटी को पूरी करेगा'' (फिलिप्पियों 4:19) आत्मा से मिलने वाली सहायता की ही बात कर रहा होगा।

मसीह की बड़ाई होना

दूसरा अच्छा परिणाम जो पौलुस ने देखा वह यीशु की बड़ाई होना: ''मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूं, कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊं, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसे ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूं या मर जाऊं'' (1:20)। यह बात सम्भवतया कैसर के सामने पौलुस की पेशी का पूर्वानुमान था। प्रेरित को यकीन था कि शाही कटघरों में वह हिम्मत से बात करेगा और उसे उस काम के लिए जिसके लिए उसने अपना जीवन दे दिया था ''लज्जित होना'' और अपमानित होना नहीं पड़ेगा।

उसका मानना था कि *हर बात* जो घटती है उससे अन्त में मसीह की बड़ाई ही होगी। ''बड़ाई'' के अर्थ वाले शब्द का अनुवाद ''फैलाव'' या ''बढ़ना'' है।[19] पहले तो यह विचार हमें अजीब लगता है। यीशु पहले ही ''बड़े से बढ़कर'' है तो फिर पौलुस उसे कैसे ''फैला'' या ''बड़ा'' कर सकता था? हम कैसे कर सकते हैं? इसका उत्तर यह है कि ''हम उसे लोगों के मनों में बड़ाई दे सकते हैं।'' जिस प्रकार बड़ा दिखाने वाला शीशा लोगों को चीज़ें और साफ़ देखने में सहायता कर सकता है वैसे ही मसीह पर केन्द्रित जीवन मनुष्य जाति को प्रभु के बारे वह दिखाने में सहायक हो सकता है, जो वह वास्तव में है।

पौलुस का मानना था कि ''मसीह की बड़ाई [उसकी] देह के द्वारा'' होगी। हमारी देहें परमेश्वर का मन्दिर हैं (1 कुरिन्थियों 6:19) और इन्हें प्रभु को समर्पित होना चाहिए (रोमियों 12:1)। पौलुस का मानना था कि ''चाहे मैं जीवित रहूं या मर जाऊं'' मसीह की बड़ाई होती रहेगी। उसका विचार था कि पेशी के बाद हो सकता है कि वह छूट जाए पर वह सर्वज्ञ नहीं था। *जो भी* हो जाए उसने यीशु को बड़ाई देने की ठान रखी थी।

उसका अनुमान था कि अपने आरोप लगाने वालों का सामना करने पर वह लज्जित होने से बच जाएगा और प्रभु को बड़ाई मिलेगी। क्या उसने इन परिणामों का श्रेय लेने की योजना बनाई?

नहीं। मूल धर्मशास्त्र में ''लज्जित होना'' और ''बड़ाई'' दोनों भविष्य *कर्मवाच्य* हैं। कर्मवाच्य उसके लिए इस्तेमाल होता है जो वाक्य के विषय के साथ *होता* है। पौलुस यह नहीं मानता था कि *वह* अपेक्षित परिणाम के लिए ज़िम्मेदार होगा, बल्कि उसका मानना था कि ज़िम्मेदार *परमेश्वर* होगा।

यदि हम पौलुस के जीवन को वैसे ही देखें जैसे वह देखता था, तो हम मान जाएंगे कि हमारे साथ जो भी होता है, वह सब कुछ सही ही होगा। यदि परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सही है और हमारा व्यवहार सही है, तो प्रभु यह *सुनिश्चित* करेगा कि सब कुछ हमारी भलाई ही के लिए हो (देखें रोमियों 8:28)। इससे हमारे मनों को कितनी शान्ति मिल सकती है!

सारांश

पौलुस को ''नींबू'' मिले थे पर उसने उनकी ''शिकंजवी'' बना ली। क्या इससे मुझे जीवन और इसकी समस्याओं को वैसे देखने में समझने की सहायता मिलेगी? यकीनन। इस पाठ पर काम करते हुए मैंने किसी को बताया, ''मुझे पौलुस के मेरे कान में अलग भावना सुनाई दी है, 'रोपर, अपने व्यवहार को सुधारो!' '' पाठ पूरा करने तक मैंने सोच लिया था कि यह कान में खमोश नहीं, बल्कि ज़ोरदार चीख थी! मुझे अपने व्यवहार को सुधारना आवश्यक है। आपको क्या लगता है कि आपको अपने व्यवहार में सुधार करना चाहिए?

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *दि लैटर्स टू द फिलिपियंस, क्रोलोशियंस एंड थेस्लोनियंस,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 22. [2]डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडिड वाइन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन आर. कोहलेन्बर्गर तृतीय के साथ जेम्स ए. स्वेन्सन (मिनियापोलिस: बेथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 468. [3]वही। [4]बार्कले, 20; एवन मेलोन, *प्रैस टू दि प्राइज़* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 35; चार्ल्स आर. स्विन्डल, *लाफ अगेन* (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1992), 53; वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोजिशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 67. [5]जहां आप रहते हैं उस पर निर्भर करते हुए आपको इसका उदाहरण मिल सकता है। द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिकी टुकड़ियों के आगे रास्ता बनाने के लिए (कच्चा पुल और हवाई क्षेत्र बनाने सहित) सी. बी. (एक अमेरिकी बटालियन) को भेजा गया। एक और उदाहरण जंगल में रास्ता बनाने का हो सकता है ताकि लोग उधर से जा सकें। [6]इस पद्य में जानकारी विल्बर फील्ड्स, *फिलिप्पियंस-क्रोलोशियंस-फिलमौन* (जौप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1969), 27; मेलोन, 36; व बार्कले, 21 सहित कई स्रोतों से ली गई है। [7]सम्भवतया 2,920 विभिन्न सिपाहियों के बजाय दोहरा था। प्रेरित और उसकी शिक्षा से प्रभावित होने वालों ने उसे पौलुस की रक्षा के लिए ड्यूटी शिफ्टों में करने की विनती की हो सकती है। [8]मैं कई बड़े परिवारों को जानता हूं जिनमें अधिकतर लड़के बेहतरीन सुसमाचार प्रचारक बने हैं। शायद आप दी गई इन ''जंजीरों'' में से प्रत्येक के लिए उदाहरण सोच सकते हैं। [9]मेलोन, 37 में उद्धृत। [10]वही।

[11]KJV में आयतें 16 और 17 उलट है। हस्तलिप का प्रमाण NASB के क्रम के पक्ष में है, परन्तु क्रम से उस पद्य का अर्थ नहीं बदल जाता। [12]यह मान लेता है कि रोमियों की पुस्तक 57 ईस्वी के आरम्भिक बसंत के लगभग लिखी गई और फिलिप्पियों की पुस्तक 62 ईस्वी के लगभग रोम में पौलुस की पहली कैद के अन्त के निकट लिखी गई। [13]*दि अनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैग्स्टर एंड सन्स, लिमिटेड, 1971), 166. इस पद्य पर समान्य जानकारी बार्कले, 23 से मिली। [14]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन गलेशियंस, इफिशियंस,*

फिलिप्पियंस, क्रोलोशियंस (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1977), 269 में उद्धृत डी. ए. हेयस। [15]पैट एड्विन हैरेल, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द फिलिप्पियंस,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, संपा. एवरेट फर्ग्यूसन (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 68. [16]बार्कले, 26. अन्य परिभाषाओं में ''जिसे देखने से सिर घूमता है'' और ''सिर घुमाना और किसी वस्तु या लक्ष्य पर अपना ध्यान लगाना'' (हैरेल, 70) (मेलोन, 39)। [17]हैरेल, 68; वियर्सबे, 69. [18]बार्कले, 24. [19]हैरेल, 70.